कहानी - बदलाव

नीता और रीता — दोनों घनिष्ठ सहेलियाँ थीं। दोनों ही पढ़ाई में बहुत होशियार थीं, परंतु परिस्थितियाँ बिल्कुल भिन्न थीं। नीता अमीर परिवार से थी, गोरी और नखरेवाली; वहीं रीता एक गरीब घर की, सांवली लेकिन संस्कारी लड़की थी। नीता के घर नौकरों की भीड़ लगी रहती थी, जबकि रीता को घर के सारे काम खुद ही करने पड़ते थे।

समय बीतता गया। नीता की शादी एक धनवान युवक से हुई, जबकि रीता की शादी एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुई। रीता जैसी खुद संस्कारी थी, वैसी ही वह अपने बच्चों को भी संस्कार सिखाती रही। दूसरी ओर, नीता के बच्चे नौकरों के भरोसे पल रहे थे।

दीवाली की रात नीता ने रीता को अपने घर खाने पर बुलाया। दोनों सहेलियाँ हँस-हँसकर बातें कर रही थीं, और बच्चे आँगन में पटाखे फोड़ रहे थे। नीता की सास भी वहीं बच्चों के पास बैठी थीं। अचानक एक पटाखा उड़कर उनके पास गिरा और वहीं रखे बाकी पटाखों में आग लग गई। पलभर में अफरा-तफरी मच गई। नीता की सास बुरी तरह झुलस गईं। जल्द ही एम्बुलेंस बुलाई गई।

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

जब घायल सास को अस्पताल ले जाया जा रहा था, रीता ने चिंतित होकर कहा, "नीता, तू आंटी के साथ चल, मैं यहाँ सब संभाल लूँगी।"

लेकिन नीता ने ठंडे स्वर में कहा, "मैं नहीं जा सकती, मुझे पूजा करनी है। दीवाली की पूजा मेरे लिए ज़रूरी है। वैसे भी वहाँ डॉक्टर होंगे, वे देख लेंगे।"

रीता ने समझाने की कोशिश की, "नीता, आंटी को इस समय अपने की ज़रूरत है। पूजा तो बाद में भी की जा सकती है।"

पर नीता अड़ी रही, "मैं नहीं जाऊँगी, तू ही चली जा, तेरे बच्चे मेरे पास रह लेंगे।"

रीता ने देर न लगाई — वह नीता की सास के साथ अस्पताल चली गई। वहाँ डॉक्टरों ने बताया कि उनके हाथ बुरी तरह जल चुके हैं। रीता सारी रात उनके पास बैठी रही, उनका मनोबल बढ़ाती रही और कहती रही — "आप जल्दी ठीक हो जाएँगी।"

उस रात अस्पताल के सन्नाटे में नीता की सास को गहरा पश्चाताप हुआ। उन्होंने सोचा — "मैंने हमेशा रूप और धन को महत्व दिया, पर बच्चों को संस्कार नहीं सिखाए। आज वही गलती मेरे सामने खड़ी है।"

कुछ ही दिनों बाद जब नीता की सास घर लौटीं, तो उनके व्यवहार में गहरा परिवर्तन आ गया। उन्होंने तय किया कि अब वे अपना जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित करेंगी। धीरे-धीरे उन्होंने असहाय और जरूरतमंद लोगों की सेवा शुरू की। अनजान व्यक्ति की मदद करने में भी वे कभी हिचकिचाती नहीं थीं।

समय बीता — वे एक प्रसिद्ध समाजसेविका बन गईं। अनेक संस्थाएँ उन्हें समय-समय पर सम्मानित करने लगीं। जब भी उनसे पूछा जाता कि "आपके जीवन में यह परिवर्तन कैसे आया?", तो वे मुस्कुराकर एक ही उत्तर देतीं —"दीवाली की वह रात मेरे जीवन की दिशा बदल गई। रूप और रंग तो ईश्वर की देन हैं, पर संस्कार — वह हमारी अपनी देन है। इसलिए हर माँ-बाप को अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने चाहिए, ताकि हम एक बेहतर समाज की स्थापना कर सकें।"

-रेणु लेसी फ्रांसिस (इंदौर)

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in